खुश शिकारी

रोजर डुवोइसिन

पतझड़ का एक अच्छा दिन था और पत्तियाँ पीली हो गईं थीं. मिस्टर बॉबिन ने शिकार के नए कपड़े पहने और अपनी चमकदार नई बंदूक ली, और फिर जंगल की ओर चले.

लेकिन वो एक बात भूल गए थे - कि वो जानवरों से प्यार करते थे.... और बच्चे ज़रूर मिस्टर बॉबिन से प्यार करेंगे जो हमेशा अपने शिकार को चेतावनी देने का कोई तरीका ढूंढ निकालते थे.

"खुश शिकारी" एक सच्ची कहानी है. असली मिस्टर बॉबिन ने लगभग पच्चीस वर्षों तक ग्लैडस्टोन, न्यू जर्सी के पास के जंगलों में हर शरद ऋतु में खुशी-खुशी शिकार किया.

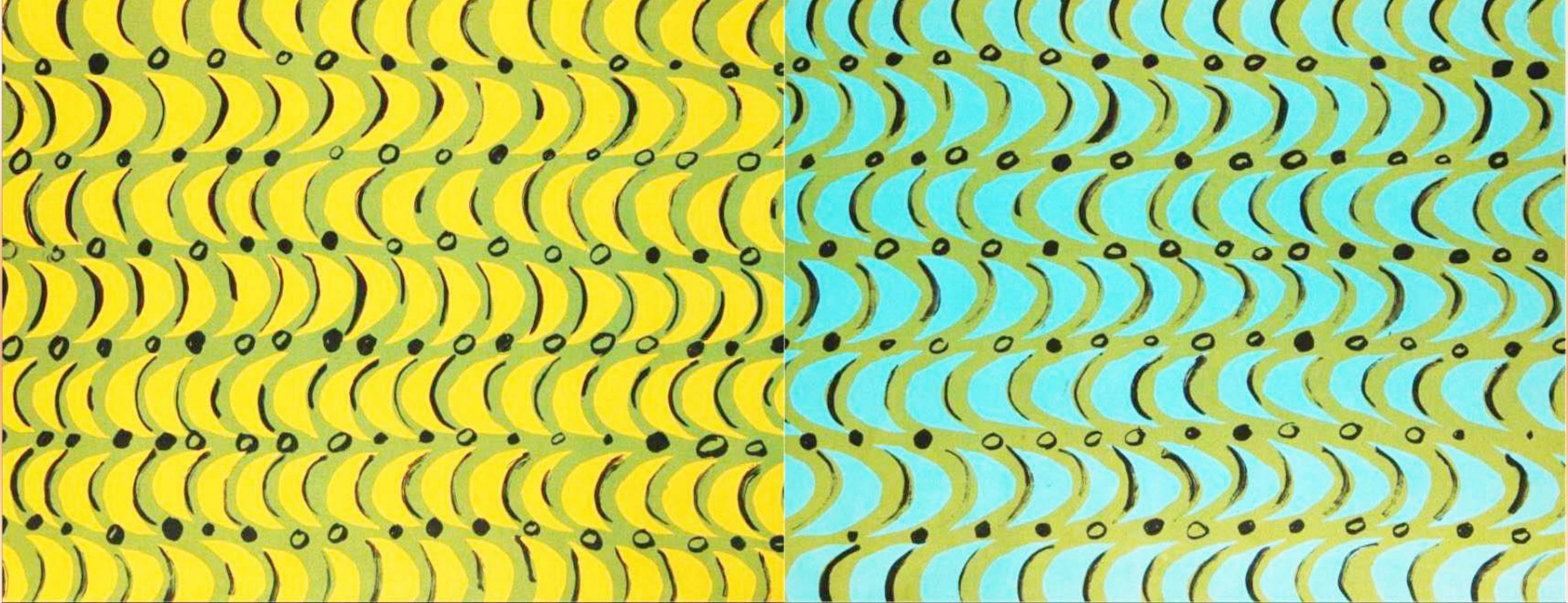

खुश शिकारी

रोजर डुवोइसिन

खुश शिकारी

मिस्टर बॉबिन जंगल के किनारे एक छोटे से घर में रहते थे. उन्हें अपने दरवाज़े के पास बेंच पर बैठना और पहाड़ों, आकाश और जंगली जानवरों को देखते हुए अपना पाइप पीना पसंद था.

जब जंगल पीला हो गया,

तब उन्होंने शिकारियों को जंगल में जाते हुए देखा.

शिकारी अपनी बड़ी पीली टोपियां और बड़े पीले कोट पहने थे.

पीले मोज़ों के साथ बड़े काले जूते, कारतूसों की कतारों के साथ बड़ी भूरी बेल्टें, और उनके हाथों मे बड़ी-बड़ी चमकदार बंदूके थीं.

जब वे शिकारी छोटे खरगोशों, तीतरों और बटेरों की तलाश में निकलते तो वे कवचधारी शूरवीरों की तरह लगते थे.

"यह अवश्य अच्छा होगा," मिस्टर बॉबिन ने सोचा,

और फिर उन्होंने अपने पाइप से धुएँ का बादल उड़ाया.

"इतना बड़ा और साहसी दिखना और जंगल में चलना,

खेतों के पार, पहाड़ियों के ऊपर और घाटियों के नीचे.

पॉलिश करने के लिए एक बढ़िया बंदूक रखना जरूर अच्छा होगा."

फिर मिस्टर बॉबिन ने खुद के लिए खरीदी

एक बड़ी पीली टोपी और एक बड़ा पीला कोट,

पीले मोज़े के साथ बड़े काले जूते,

कारतूसों की कतार वाली एक बड़ी भूरी बेल्ट,

और हाथ मे पकड़ने के लिए एक बड़ी बंदूक.

और उसके बाद मिस्टर बॉबिन शिकार करने गये.

जब मिस्टर बॉबिन ने एक छोटे से खरगोश को देखा

खरपतवार के झुरमुट के पीछे सूखी घास चबाते हुए,

तब उन्होंने अपनी बंदूक उठाई और उसके "छेद" में से निशाना साधा

उन्होंने झाँका... और झाँका... ... और झाँका,

और फिर उन्होंने अपनी बंदूक नीचे रख दी और खाँसते हुए कहा, "हूँ...हूँ...हूँ."

खरगोश ने ऊपर देखा और कहा, "हे भगवान, एक शिकारी!"

और फिर तीन छलांगें मारकर खरगोश लंबी घास में गायब हो गया.

"वो एक तेज़ छोटा होशियार खरगोश था," मिस्टर बॉबिन ने मुस्कुराते हुए कहा

और फिर उन्होंने अपनी चमकदार बंदूक को रूमाल से पोंछा.

जब मिस्टर बॉबिन ने एक गिलहरी को पत्थर पर एक अखरोट तोड़ते हुए देखा,

तो वो एक झाड़ी के पीछे अपनी बढ़िया बंदूक लेकर बैठ गए,

और फिर उन्होंने निशाना साधा... उन्होंने सिर्फ निशाना साधा,

और फिर उन्होंने एक छोटी सी धुन गुनगुनाई: "डी-दम, डी-दम."

गिलहरी ने अपना अखरोट गिरा दिया और बोली,

"उफ़, एक शिकारी शिकार कर रहा है."

फिर एक छलांग में गिलहरी पेड़ पर चढ़ गई.

"वो एक चतुर छोटी गिलहरी थी," मिस्टर बॉबिन ने कहा

और फिर मिस्टर बॉबिन अपना पिकनिक लंच खाने बैठ गए.

मिस्टर बॉबिन उस शाम देर से घर आए.

वो थके हुए थे लेकिन खुश थे.

उन्होंने कहा, "शिकार करना वैसा नहीं था जैसा मैंने सोचा था."

"लेकिन फिर भी, आज का शिकार का दिन बहुत प्यारा था.

मैंने खेतों और जंगलों में अच्छी सैर की."

और फिर उन्होंने अपनी बढ़िया बंदूक चमकाई और फिर लोबिए और चाय का अच्छा भोजन करने के बाद, वो बिस्तर पर लेट गए.

जब मिस्टर बॉबिन अगली बार शिकार करने गए,

तब उन्होंने एक तीतर को जंगल में अंगूर तोड़ते हुए देखा.

मिस्टर बॉबिन तुरंत एक चट्टान के पीछे छिप गए और उन्होंने अपनी पॉलिश की हुई बंदूक उठाई

बहुत शांत... बहुत शांत... ... बिल्कुल शांत,

और फिर उन्होंने सीटी बजाई, "एसएसएसएस... एसएसएस... एसएसएसएसएस!"

"अरे बाप रे!" तीतर चिल्लाया, "बंदूक वाला शिकारी!"

और फिर अपने भारी पंखों को फड़फड़ाते हुए तीतर पेड़ों के बीच से उड़ गया.

"वो विशेष रूप से एक सुंदर पक्षी था लेकिन वो शोर मचाने वाला था,"

मिस्टर बॉबिन ने ख़ुशी से कहा और फिर उन्होंने अपनी टोपी में चिपकाने के लिए एक पंख उठाया.

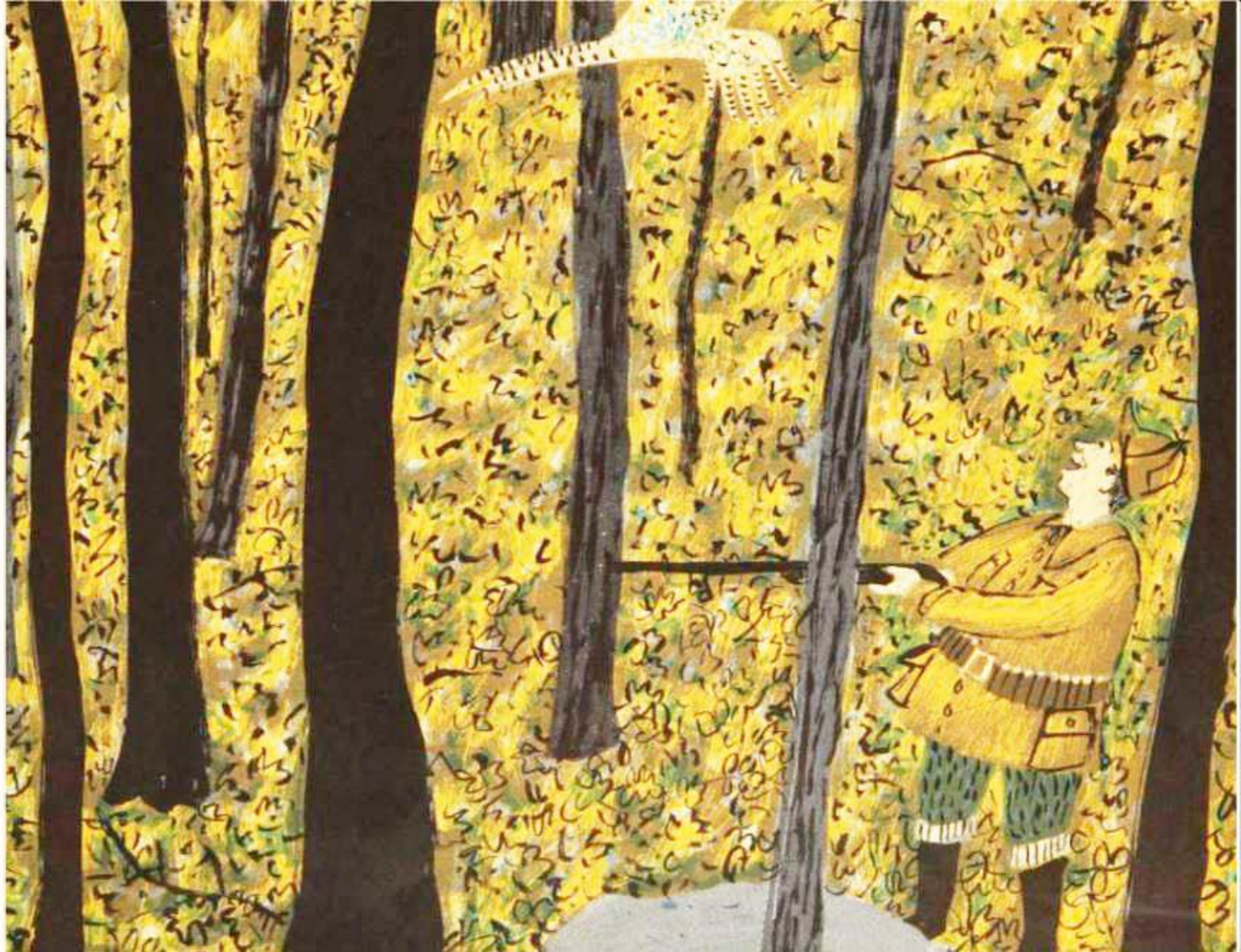

जब मिस्टर बॉबिन ने घाटी में तालाब के किनारे एक छोटी बत्तख को कीड़े निगलते हुए देखा,

तो वो एक गिरे हुए पेड़ के पीछे अपनी बंदूक लेकर लेट गए और देखते रहे...

और देखते रहे... ... बस देखते रहे,

और फिर उन्होंने अपना रूमाल निकाला और ज़ोर से अपनी नाक छिड़की.

"क्वैक, क्वैक, क्वैक," एक कीड़े का गला दबाते हुए छोटी बत्तख चिल्लाई,

"एक शिकारी आया है! चलो, यहाँ मत रुको."

और फिर बत्तख ने अपना सर झुकाकर तालाब में गोता लगाया.

"बतख बड़े प्यारे पक्षी होते हैं," मिस्टर बॉबिन ने अपना पाइप जलाते हुए कहा.

जब मिस्टर बॉबिन उस रात घर लौटे तो वे पहले से कहीं अधिक खुश थे.

"शिकार करना कितना मज़ेदार है," उन्होंने कहा.

"आज मैंने घाटी की अद्भुत सैर की."

फिर उन्होंने अपनी बंदूक चमकाई और पैनकेक और दूध का भरपूर भोजन किया.

जब अगले वर्ष हवा काफी ठंडी थी, लेकिन मिस्टर बॉबिन फिर से शिकार करने गए.

उन्होंने एक लोमड़ी को एक पत्थर की दीवार के ऊपर धूप सेंकते हुए देखा.

वो अपनी बंदूक को स्थिर रखने के लिए एक पेड़ का सहारे झुक गए...

एकदम स्थिर... ... बहुत स्थिर, और फिर अंत में वो छींके: "आछू! आछू!!"

"ठीक है," लोमड़ी ने अपनी आँख की कनखी से देखते हुए कहा, "वो अपनी चमकदार बंदूक के साथ मिस्टर बॉबिन ही होंगे."

और फिर लोमड़ी एक जम्हाई लेकर वहीं सो गई.

"यह जंगल की सबसे मोटी, सबसे चालाक लोमड़ी है," मिस्टर बॉबिन ने उस मुलाकात के बाद बहुत प्रसन्न होकर कहा.

जब मिस्टर बॉबिन ने एक ओपस्सम को नहर के किनारे सेब खाते हुए देखा.

फिर उन्होंने एक पुरानी बाड़ से खुद को सहारा दिया

और फिर अपनी चमकदार बंदूक कंधे पर रखी

फिर धीरे से... ध्यान से... ... और बेहद सावधानी से,

उन्होंने अचानक अपने गाल पर थप्पड़ मारा,

"धत्त तेरे की! एक मधुमक्खी ने मुझे काट लिया!"

"अरे!" ओपस्सम ने कहा, जो ऊपर देखने में बहुत व्यस्त था,

"देखो मिस्टर बॉबिन आए हैं. मैं सोचता हूं कि जब वो शिकार करने जाते हैं तो वो अपनी बंदूक क्यों साथ लेकर जाते हैं."

और फिर ओपस्सम चुन-चुन कर अच्छे सेब तोड़ता रहा.

"वो एक बड़ा बुद्धिमान ओपस्सम था," मिस्टर बॉबिन ने कहा,

"सर्दी आने से पहले वो पेट भर कर अच्छा भोजन खा रहा था."

"ठीक है," मिस्टर बॉबिन ने उस रात घर जाते हुए कहा,

"आज एक और खूबसूरत शिकार का दिन था. मैंने जंगल में एक सुंदर सैर की."

और फिर उन्होंने अपनी बड़ी पीली टोपी और अपना बड़ा पीला कोट, पीले मोज़ों के साथ अपने बड़े काले जूतों, कारतूसों की कतार वाली बड़ी भूरे रंग की बेल्ट और अपनी बड़ी चमकदार बंदूक को अलग रख दिया. फिर उन्होंने नूडल्स, सेब की चटनी और हॉट चॉकलेट का स्वादिष्ट भोजन किया.

कई वर्षों तक हर साल जब जांगले में पत्तियाँ पीली हो जाती थीं, तब मिस्टर बॉबिन शिकार करने जाते थे

जंगल से होते हुए, वो खेतों के पार, और पहाड़ियों के ऊपर जाते थे.

वो सभी जंगलों, झरनों और जानवरों को अच्छी तरह जानते थे.

लेकिन एक साल उन्होंने पाया कि बड़ी पीली टोपी और बड़े पीले कोट के साथ पूरे दिन चलना उनके लिए बहुत कठिन हो गया था,

पीले मोज़ों के साथ बड़े काले जूते,

कारतूसों की कतार वाली उसकी बड़ी भूरी बेल्ट,

बड़ी चमकदार बंदूक के साथ चलना अब मुश्किल हो गया था.

शायद मिस्टर बॉबिन अब बहुत बूढ़े हो गये थे.

वो बहुत दुखी थे.

अब सभी जानवर काफी चिंतित थे,

मिस्टर बॉबिन का क्या हुआ?

"वो अब शिकार क्यों नहीं करते?" बत्तख ने पूछा. "मुझे उनकी बहुत याद आती है."

"शायद वो कहीं दूर चले गए हों," खरगोश ने कहा.

“शायद वो बीमार हों,” तीतर ने कहा.

"मैं तुम्हें बताऊंगी," लोमड़ी ने कहा.

"मिस्टर बॉबिन शिकार करने के लिए बहुत बूढ़े हो गए हैं.

अब वो बस अपने दरवाजे के पास बेंच पर बैठकर सिर्फ पाइप पीते हैं."

"तो फिर चलो उनसे चलकर मिलते हैं," भालू ने कहा.

फिर भालू, हिरण और लोमड़ी, रैकून, खरगोश, वुडचक, गिलहरी और ओपस्सम, तीतर और बटेर, दोपहर में मिस्टर बोबिन के साथ उनके छोटे से घर के दरवाजे पर बैठने के लिए आए.

उससे, मिस्टर बॉबिन के बाकी साल भी ख़ुशी से भर गए.

अंत